दया का अधिकार-पत्र

दया का सिद्धांत सभी धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक परंपराओं के मूल में बसता है, जो हमें सदैव कहता है कि हम सभी से ऐसा बर्ताव करें जैसा हम अपने लिए चाहते हैं। दया की भावना हमें अपनी दुनिया के केंद्र से स्वयं को उतारने और वहां दूसरे को बैठाने के लिए तथा प्रत्येक मनुष्य की अलंघ्य पवित्रता का सम्मान करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के साथ बिना किसी अपवाद, पूर्ण न्याय, समानता और सम्मान का बर्ताव करने और हमारे साथी प्राणियों के दुख निवारण के लिए अथक प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है।

यह भी जरूरी है कि सार्वजनिक और निजी जीवन, दोनों में होने वाली पीड़ा से निरंतर और प्रभावी तरीके से मुक्त हों। द्वेष, उग्रराष्ट्रीयता, अथवा स्वयं के स्वार्थवश हिंसा करना, या कटु बोलना, किसी व्यक्ति को दबाना, शोषण करना अथवा मूल अधिकारों को नकारना, और दूसरों को बदनाम कर द्वेष फैलाना ~ अपने शत्रुओं के साथ भी ~ हमारा सामान्य मानवता को त्यागना है। हम स्वीकार करते हैं कि हम दया-भाव के साथ जीने में असफल रहे हैं और यह कि कुछ लोगों ने तो धर्म के नाम पर मानवीय विपदा को बढ़ाया ही है।

इसलिए हम सभी पुरूषों और महिलाओं से कहते हैं ~ नैतिकता और धर्म के केन्द्र में दया को फिर से स्थापित करें ~ ऐसे प्राचीन सिद्धांत को पुनःस्थापित करें कि किसी धर्म ग्रंथ की ऐसी व्याख्या जिससे हिंसा, द्वेष अथवा घृणा फैलती हो, न्याय विरूद्ध है ~ सुनिश्चित करें कि युवाओं को अन्य परंपराओं, धर्मों और संस्कृतियों के बारे में सही और सम्मानजनक जानकारी दी जाए ~ सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता की सकारात्मक सराहना के लिए प्रोत्साहित करें ~ सभी मनुष्यों के दुखों के प्रति सूचित समानुभूति पैदा करें ~ चाहे वे अपने शत्रुओं जैसे क्यों न समझे जाएं।

हमें तत्काल जरूरत है कि हम अपनी ध्रुवीकृत दुनिया में दया को एक स्पष्ट, प्रकट और सक्रिय ताकत बनाएं। स्वार्थपरायणता कम करने के निर्धारित संकल्प की जड़, दया राजनैतिक, हठी, वैचारिक और धार्मिक सीमाओं को तोड़ सकती है। हमारी गहरी परस्पर अधीनता से उपजी, दया, मानवीय संबंधों और संपूर्ण मानवता के लिए आवश्यक है। यह ज्ञान का मार्ग है, और सही अर्थव्यवस्था तथा शांतिपूर्ण वैश्विक समुदाय के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।